अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





16 श्रृन्गार
16 Traditional Adornments

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

16 श्रृन्गार 16 Traditional Adornments

अध्याय शीर्षक	16 श्रृन्गार
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**16 Traditional Adornments**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

16 श्रृन्गार 16 Traditional Adornments

16 श्रृन्गार 16 Traditional Adornments

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बान्दा क्षेत्र के **16 श्रृन्गार** का संक्षिप्त वर्णन

16 श्रृन्गार 16 Traditional Adornments

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

श्रृन्गार

भारतीय साहित्य में सोलह श्रृन्गार (षोडश श्रृन्गार) की यह प्राचीन परम्परा रही हैं। आदि काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों प्रसाधन करते आए हैं। इस कला का यहां इतना व्यापक प्रचार था कि प्रसाधक और प्रसाधिकाओं का एक अलग वर्ग ही बन गया था। इनमें से प्रायः सभी श्रृन्गारों के दृश्य हमें द्वारस्तंभों पर अन्कित(उभारे हुए) मिलते हैं।

सौन्दर्य प्रसाधन में अंगशुची, मंजन, वसन, माँग, महावर, केश, तिलक भाल में, तिल चिबुक में, भूषण मेंहदी वेश, मिस्सी, काजल, अरगजा, वीरी और सुगंध अर्थात् अंगों में उबटन लगाना, स्नान करना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, माँग भरना, महावर लगाना, बाल सँवारना, तिलक लगाना, ठोढ़ी पर तिल बनाना, आभूषण धारण करना, मेंहदी रचाना, दाँतों में मिस्सी, आँखों में काजल लगाना, सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग, पान खाना, माला पहनना, नीला कमल धारण करना आदि शामिल है।

प्रेम के देवता कामदेव की पत्नी रति की श्रृन्गार के पीछे की कहानी में पुनःकहानी है। रति ने देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की थी। तब उन्हें लक्ष्मी से 16 आभूषणों का आशीर्वाद मिला और उन्होंने कामदेव को प्रभावित करने और उनसे शादी करने के लिए उन्हें पहना।

पौराणिक काल में 16 श्रृन्गार (षोडश श्रृन्गार) स्त्रियों के सौंदर्य और सौभाग्य का प्रतीक माने जाते थे, जिसमें 16 चीजें शामिल होती थीं, जो हर काल और क्षेत्र के अनुसार थोड़ी भिन्न होती थीं, लेकिन इनका मूल उद्देश्य स्त्री की दिव्यता और सौंदर्य को बढ़ाना होता था।

	अंग	क्रिया अविवाहिता	क्रिया विवाहिता	दुल्हन
1		उबटन(अंगराग)	उबटन	
2		स्नान	स्नान	
3		वस्त्र	वस्त्र	दुल्हन परिधान(साड़ी / लहंगा)
4	केश	केश–सज्जा	केश–सज्जा	मांग टीका
5	बाल चोटी / सिर	पुष्प–सजावट	पुष्प–सजावट	पुष्प–सजावट
	मांग		सिन्दूर विवहिता	
6	माथा	बिन्दी	बिन्दी	बिन्दी
7	नेत्र	काजल	काजल	काजल
8	नाक	नथ	नथ	नथ (नाक की बाली)
9	कान	झुमके	झुमके	झुमके
10	ओंठ	अधर–रंग(सुगंधित पान / मिस्सी)	अधर–रंग(सुगंधित पान / मिस्सी)	
11	गला	हार	हार	हार
	गला विवहिता	मंगलसूत्र	मंगलसूत्र	
12	हाथ	मेहंदी	मेहंदी	मेहंदी
13	हाथ की उगली	अंगूठी	अंगूठी	अंगूठी
14	कलाई व कोहनी	कंगन व बाजूबन्द	कंगन व बाजूबन्द	चूड़ियाँ व बाजूबन्द
15	कमर	कमरबन्द	कमरबन्द	कमरबन्द
16	पैर	पायल	पायल	पायल
	पैर की उगली		बिछिया / पैर की अंगूठियाँ विवाहिता	
	पैर	आलता (महावर)	आलता (महावर)	
		इत्र		

16 श्रृन्गार 16 Traditional Adornments

सोलह श्रृन्गार की प्रमुख वस्तुएँ (विभिन्न मान्यताओं के अनुसार)

उबटन(अंगराग)

स्नान के पहले उबटन का बहुत प्रचार था। इसका दूसरा नाम अंगराग है। अनेक प्रकार के चंदन, कालीयक, अगरु और सुगंध मिला कर इसे बनाते थे। जाड़े और गर्मी में प्रयोग के हेतु यह अलग अलग प्रकार का बनाया जाता था। सुगंध और शीतलता के लिए स्त्री पुरुष दोनों ही इसका प्रयोग करते थे।

हल्दी, चंदन, दूध आदि का लेप मुख्य कारक है। स्नान के पहले उबटन का बहुत प्रचार था। इसका दूसरा नाम अंगराग है। अनेक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य जैसे चंदन, कालीयक, अगरु और सुगंध मिलाकर इसे बनाया जाता था। जाड़े और गर्मी में प्रयोग के हेतु यह अलग अलग प्रकार का बनाया जाता था। सुगंध और शीतलता के लिए स्त्री पुरुष दोनों ही इसका प्रयोग करते थे।

स्नान

दिव्य और सुगंधित जल से स्नान विशेष होता था। स्नान के अनेक प्रकार काव्यों में वर्णित मिलते हैं पर इनमें सबसे अधिक लोकप्रिय जलविहार या जलक्रीड़ा था। अधिकान्शतः स्नान के जल को पुष्पों से सुरभित कर लिया जाता था जैसे आजकल बाथसाल्ट का निष्फल प्रयत्न किया जाता है। एक प्रकार के विशिष्ट साबुन का भी प्रयोग होता था जो फेनक कहलाता था और जिसमें से झाग भी निकलता थे।

वस्त्र

स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र धारण करना सौन्दर्य वर्धन का प्रथम स्तर है। वसन वे स्वच्छ वस्त्र थे जो नहाने के बाद नर नारी धारण करते थे। पुरुष एक उत्तरीय और अधोवस्त्र पहनते थे और स्त्रियाँ चोली और घाघरा पहनती थी। यद्यपि वस्त्र रंगीन भी पहने जाते थे तथापि प्राचीन नर–नारी श्वेत उज्जवल वस्त्र अधिक पसंद करते थे। इन पर सोने, चाँदी और रत्नों के काम कर और भी सुन्दर बनाने की अनेक विधियाँ थीं।

केश–सजा(केशपशार्चना)

बालों को संवारना, जूड़ा बनाना और फूलों (गजरा) से सजाना केश सज्जा में शामिल है। बाल सँवारने के तो तरीके हर समय के अलग अलग थे। स्नान के बाद केशों से जल निचोड़ लिया जाता था। सूखे बालों को धूप और चंदन के धुँए से सुगंधित कर अपने समय के अनुसार अनेक प्रकार की वेणियों, अलकों और जूड़ों से सजाया जाता था। बालों में मोती और फूल गूँथने का आम रिवाज था। विरहिणियाँ और परित्यक्ता वधुएँ सूखे अलकों वाली ही काव्यों में वर्णित की गई हैं; वे प्रसाधन नहीं करती थीं। इस तरह के अनेक दृश्य पत्थर पर उत्कीर्ण मिलते हैं।

सिन्दूर

मांग में सिन्दूर भरना विवाहिता का प्रथम व मुख्य श्रृंगार है। स्नान के उपरान्त सभी सुहागवती स्त्रियां सिन्दूर से माँग भरती थीं। वस्तुतः वारवनिताओं को छोड़कर अधिकतर विवाहित स्त्रियों के श्रृन्गार प्रसाधनों में सिन्दूर का उल्लेख मिलता है। सिन्दूर के स्थान पर कभी कभी फूलों और मोतियों से भी माँग सजाने की प्रथा थी।

काजल

आँखों में लगाना। आँखों में काजल या अंजन का प्रयोग व्यापक रूप से होता था। मूर्तिकला में बहुधा शलाका से अंजन लगाती हुई नारी का चित्रण हुआ है।

बिन्दी/टिकुली

माथे पर बिन्दी/टिकुली लगाया जाता है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

मेहंदी

हाथों और पैरों में रचाना लगाते है। आजकल की तरह प्राचीन भारत में भी हथेली और नाखूनों को मेहँदी से लाल करने का आम रिवाज था।

आभूषण–

आभूषण में हार, कर्णफूल, बाजूबन्द, कंगण, पायल, बिछिया, अंगूठी, बिन्दी/टिकुली आदि का प्रयोग होता था। ये आभूषण माथा, नाक, कान, गला, हाथ, कलाई, कमर, पैर और उंगलियों व अन्य अंगों में में प्रयोग होते थे। आभूषणों की तो अनंत परम्परा थी जिसे नर नारी दोनों ही धारण करते थे। मध्यकाल में तो आभूषणों का प्रयोग इतना बढ़ा कि शरीर का शायद ही कोई भाग बचा हो जहाँ गहने न पहने जाते हों।

कमरबन्द

कमर में पहना जाता है।

आलता/महावर

पैरों की एड़ियों और उंगलियों को लाल रंग आलता से रंगा जाता है। महावर लगाने की रीति तो आज भी प्रचलित है, विशेषकर त्यौहारों या मांगलिक अवसरों पर प्रत्येक सुहागिन उपयोग करती है। इनसे नाखून और पैर के तलवे तो रचाए ही जाते थे, साथ ही इसे होठों पर लगाकर आधुनिक लिपिस्टिक का काम भी लिया जाता था। होठों पर महावर लगाकर लोध्रचूर्ण छिड़क देने से अत्यंत मनमोहक पाण्डुता का आभास मिलता था।

नथ

नाक में पहनना (एक महत्वपूर्ण आभूषण)।

मुखवास/पान

सुगंधित पान खाना या मुखवास लेना जिससे मुँह को सुवासित होता है। मुँह को सुगंधित करने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों ही तांबूलया पान खाते थे। राजाओं की परिचारिकाओं में ताम्बूलवाहिनी का अपना विशेष स्थान था।

मुँह का प्रसाधन तो नारियों को विशेष रूप से प्रिय था। इसके पत्ररचना, विशेषक, पत्रलेखन और भक्ति आदि अनेक नाम थे। लाल और श्वेत चंदन के लेप से गालों, मस्तक और भवों के आस पास अनेक प्रकार के फूल पत्ते और छोटी बड़ी बिन्दियाँ बनाई जाती थी। इसमें गीली या सूखी केसर या कुमकुम का भी प्रयोग होता था। बाद में इसका स्थान बिन्दी ने ले लिया जो आज भी इस देश की स्त्रियों का प्रिय प्रसाधन है। कभी केवल काजल की अकेली बिन्दी भी लगाने की रीति थी। आजकल की भाँति ही बीच ठोढ़ी पर दो छोटे छोटे काजल के तिल लगाकर सौंदर्य को आकर्षक बनाने का चलन था।

दान्त मंजन/मिस्सी

दान्तों को साफ करना/रंगना (मिस्सी)।

सुगंधित द्रव्य (इत्र)

शरीर पर विशेष अंग पर लगाना। अरगजा एक प्रकार का लेप है जिसे केसर, चंदन, कपूर आदि मिलाकर बनाते थे। आधुनिक इत्र या सेंट की तरह शरीर को सुगन्धित करने के लिए इसका अधिकतर प्रयोग किया जाता था।

पुष्प–सजा

विभिन्न फूलों से श्रृन्गार (जैसे नीले कमल धारण करना)। भारतीय नारी को अपने प्रसाधन में फूलों के प्रति विशेष मोह है। जूड़े में, वेणियों में, कानों, हाथों, बाहों कलाइयों और कटिप्रदेश में कमल, कुंद, मंदार, शिरीष, केसर आदि के फूल और गजरों का प्रयोग करती थीं।

महत्व–

श्रृन्गार स्त्री के सौंदर्य रूप को निखारते है।

सौभाग्य चिन्ह

सुहागिन स्त्रियों के लिए ये सौभाग्य और समृद्धि के प्रतीक हैं।

धार्मिक/वैज्ञानिक पहलू

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, ये चंद्रमा की कलाओं से जुड़कर नकारात्मक ऊर्जा को दूर करते थे और शरीर को स्वस्थ रखते थे (जैसे चांदी की पायल हड्डियों के लिए)।

वैज्ञानिक कारण

हल्दी, चूना और थोड़ी मात्रा में पारे की धातु से बना सिन्दूर शरीर को ठंडा रखता है और दुल्हन को आराम महसूस कराता है। जैसे–जैसे पत्नी की जिम्मेदारियां बढ़ती हैं, तनाव शरीर पर असर डाल सकता है। सिन्दूर पहनने से वह सन्तुलित रहती है और अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रख पाती है।

16 आभूषण जो दुल्हन के सोलह श्रृन्गार में प्रयोग होते है।

सोलह श्रृन्गार एक पारम्परिक भारतीय दुल्हन का सौंदर्य अनुष्ठान है। जिसमें पारम्परिक वस्तुएँ शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक सुन्दरता, समृद्धि और वैवाहिक सुख का प्रतीक है, हालांकि विशिष्ट वस्तुओं या क्रम में क्षेत्रीय रीति–रिवाजों के आधार पर भिन्नता हो सकती है।

पारम्परिक वस्तुएं दुल्हन के सन्दर्भ में

बिन्दी

माथे पर लगाई जाने वाली बिन्दी, जो एकाग्रता और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। बिन्दी दुल्हन के माथे के बीच में याभौंहों के बीच की जगह पर लगाई जाती है। पारम्परिक रुप से, यह गोल और लाल रंग की होती है, लेकिन अब बिन्दियों को दुल्हन के रुची व पहनावे के अनुसार लगाया जाता है।

सिन्दूर

बालों की मांग में लगाया जाने वाला सिन्दूर, जो वैवाहिक स्थिति का प्रतीक है। सिन्दूर एक लाल रेखा होती है जो दुल्हन के बीच से बांटे हुए बालों में सिन्दूर पाउडर से खींची जाती है और इसे केवल शादीशुदा महिलाएं ही पहनती हैं। पारम्परिक रुप से, सिन्दूर की पहली रेखा उसके पति द्वारा खींची जाती है।

मांग टीका

माथे पर पहना जाने वाला आभूषण, जो एकता का प्रतीक है। मांग का टीका एक ऐसा आभूषण जो दुल्हन के सिर पर टिका रहता है और इसके आखिर में एक सजावट होती है, जो उसके माथे पर गिरती है। इसे उसका पहला आभूषण माना जाता है और यह कई तरह की धातुओं से बना हो सकता है जिसमें पत्थर जड़े होते हैं।

काजल (अंजन)

आंखों के लिए काजल, जो सुन्दरता बढ़ाता है और नकारात्मकता को दूर करता है। पारम्परिक रुप से, काजल का इस्तेमाल बुरी आत्माओं से बचाने और आंखों को ठंडक देने के लिए किया जाता था। यह दुल्हन को और खूबसूरत बनाता है।

नथ

नाक की बाली, जो सुन्दरता बढ़ाती है। नथ जो दुल्हन अपनी शादी या त्योहारों में पहनती है। इसे नाक में छेद करके या क्लिप लगा कर भी पहना जा सकता है। नथ कई अलग–अलग रुपों में आती हैं जिनमें पत्थर जड़े होते हैं।

झुमका/बाली

कानों के लिए आभूषण, जो चेहरे को एक सुन्दरता प्रदान करते हैं। कर्ण फूल को कान फूल के नाम से भी जाना जाता है। वह चांदबाली, झुमके, में से एक चुन सकती है, जिनमें कीमती पत्थर जड़े हो सकते हैं।

हार

गले का आभूषण, प्रतिबद्धता का प्रतीक। हार दुल्हन का आभूषण भी है। इन्हें अपनी पसन्द के अनुसार ढाला बनाया जा सकता है।

मंगलसूत्र

एकता और प्रतिबद्धता का प्रतीक पवित्र धागा।

चूड़ियाँ (चूड़ा/कंगन)

कलाई के आभूषण, खुशी लाते हैं। कोई भी नई दुल्हन को उसकी कलाई पर पहनी चूड़ियों से पहचान सकता है। वे कांच या कीमती धातुओं की बनी हो सकती हैं और आमतौर पर लाल, सफेद और सुनहरे रंग की होती हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि दुल्हन की परम्परा कहाँ की है।

बाजूबन्ध

सुन्दरता और सुरक्षा के लिए ऊपरी बांह पर पहना जाने वाला आभूषण। बाजूबन्द को दुल्हन भी पहनती है, आमतौर पर अपनी बांह पर कसकर। यह आमतौर पर सोने का बना होता है लेकिन इसे दूसरी कीमती धातुओं से भी बनाया जा सकता है।

मेहंदी

सौभाग्य के लिए हाथों और पैरों पर लगाई जाती है। दुल्हन के हाथों और पैरों पर मेहंदी लगाना शादी का एक खास हिस्सा है। कहा जाता है कि उसकी मेहंदी का गहरा रंग उसके पति के गहरे प्यार को दिखाता है। मेहंदी के डिज़ाइन रुचि के अनुसार ढाले जा सकते है।

कमरबन्ध

कमर को सुशोभित करता है और गरिमा प्रदान करता है। जिसे दुल्हन भी पहनती है। यह आमतौर पर सोने का बना होता है लेकिन इसे दूसरी कीमती धातुओं से भी बनाया जा सकता है।

पायल–

पैरों में पहनने वाला आभूषण जिसकी ध्वनि मधुर होती है। दुल्हन द्वारा भी पहनी जाने वाली पायल होती हैं। ये आमतौर पर चांदी की बनी होती हैं और चलने पर एक सुखद खनकने वाली आवाज़ करती हैं।

बिछिया

आभूषण जो पैर की उंगलियों में पहना जाता है। वैवाहिक स्थिति का प्रतीक है और प्रजनन क्षमता को मजबूत करती है। बिछिया दुल्हन द्वारा पहनी जाने वाली पैर की अंगूठी है। इसे आमतौर पर दूसरी उंगली में पहना जाता है और यह चांदी की बनी होती है।

इत्र

सुगंध और आकर्षण का एक स्पर्श। दुल्हन अपनी शादी की विभिन्न रस्मों के दौरान लगाती है।

दुल्हन का पहनावा (साड़ी/लहंगा)

अंतिम स्पर्श, अक्सर शुभ रंगों में।

कुछ सूचियों में इन 16 श्रेणियों के भीतर वर्तमान में सन्शोधित –बालों के सामान, अंगूठियां, या लिपस्टिक जैसे विशिष्ट सौन्दर्य उत्पादों जैसी वस्तुओं को आपस में बदला या संयोजित किया जा सकता है।